P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-4* December- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# कृषि लागत, कृषि आय एवं कृषक जीवन स्तर का सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन (ग्राम मुरादाबाद, तहसील सिकंदराबाद, जनपद बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में)

# Micro Level Study of Agricultural Cost, Agricultural Income And Farmer's Living Standard (With Special Reference To Village , Tehsil Sikandrabad, District Bulandshahr, Uttar Pradesh)

**Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12/2021**

**सुरभि पायल**
शोध छात्रा,
वाणिज्य विभाग,
अग्रसेन पी. जी. कॉलेज,
सिकंदराबाद, बुलंदशहर,
उत्तर प्रदेश, भारत

वर्तमान समय में दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई कृषि कार्य की लागतों एवं नहीं के बराबर परिवर्तनशील कृषि उपज मूल्य तथा प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता में गिरावट के परिपेक्ष्य में लाभ के व्यवसाय के रूप में कृषि अपना स्थान खोती जा रही है। शोध पत्र में इन्हीं बिन्दुओं को आधार मानते हुए जिला बुलंदशहर तहसील सिकंदराबाद के गाँव मुरादाबाद का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण पध्दति पर आधारित इस शोध पत्र में सामान्य रूप से किसानों में कृषि के प्रति निरूत्साह एवं निरन्तर घटती चाह दिखाई पड़ती है।कृषक स्तर पर कृषि लागतों में निरन्तर वृद्धि एवं कृषि उपज के मूल्य में वृद्धि न होने से कृषि उत्पाद आय कम होना पाया गया है जिसके कारण कृषि से लाभ उत्साहजनक नहीं रहते हैं।

At present, agriculture is losing its place as a profitable business in the context of increasing day-to-day cost of agricultural work and negligible variable agricultural produce price and decline in per capita land availability. Considering these points as the basis in the research paper, a microscopic study of village Moradabad of district Bulandshahr tehsil Secunderabad has been done.In this research paper based on the survey method, there is a general lack of interest and lack of interest in agriculture among the farmers. Due to the continuous increase in the agricultural cost at the farmer level and no increase in the value of agricultural produce, the income of agricultural produce was found to be low. Due to which the benefits from agriculture are not encouraging.

**मुख्यशब्द :-** कृषि लागत, कृषि उपज मूल्य, कृषकों काजीवन स्तर।
**Key words:** Agricultural Cost, Agricultural Produce Price, Living Standards Of Farmers.

**प्रस्तावना**

भारत एक कृषि प्रधान देश है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या लगभग 137 करोड़ है। इसमें से लगभग 67% जनसंख्या कृषि करती है और 137 करोड़ जनसंख्या को खदान्न सामाग्री उपलब्ध करती है तथा उधोगों के लिए कच्चा माल भी प्रदान करती है। खदान्न सामग्री एवं कच्चा माल प्रदान कराने के लिए कृषि आगतों की भी अवश्यकता होती है। कृषि में प्रयोग होने वाले साधन जैसे- भूमि, कृषि यंत्र, सिचाई, श्रम, उर्वरक, बीज, जुताई, कीटनाशक दवाई एवं परिवहन आदि की जरूरत पड़ती है, इनको ही कृषि आगत कहते है। इन्हे प्राप्त करने के लिए जिस धन की आवश्यकता होती है, उसे कृषि लागत कहते हैं।

शोध अधध्यन के क्षेत्र गाँव मुरादाबाद के कृषक कृषि छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं क्योंकि कृषि लागत इतनी अधिक आने लगी है कि किसनों को कोई बचत नहीं हो रही है। अपने परिवार का भरण-पोषण भी सही से नहीं कर पा रहे हैं। बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने में भी समर्थ नहीं है क्योंकि उन्हें कृषि में प्रयुक्त होने वाले साधन भी जुटाने पड़ते हैं। साधनों को जुटाने के लिए धन कि जरूरत पड़ती है यदि किसान के पास धन नहीं है तो वह साहूकार या बैंक से ऋण लेने के लिए मजबूर हो जाता है और ऋणग्रस्त हो जाता है जिससे किसान चिंताग्रस्त भी हो जाता है। कृषि लागत अधिक होने से कृषकों की आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर भी खराब हो रहा है और इसमें कोई सुधार नहीं हो पा रहा है जिस कारण किसान कृषि छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं।

**अध्ययन का क्षेत्र**

जिला बुलंदशहर में सात तहसील हैं, जिसमें 16 विकासखण्ड हैं। जिले में 1246 गाँव हैं एवं सभी गाँव में कृषि की जाती है। शोध क्षेत्र जिला बुलंदशहर की तहसील सिकंदराबाद में 142 गाँव में से गाँव मुरादाबाद है। गाँव करो नदी के किनारे बसा हुआ है लेकिन नदी में पानी नहीं है, गाँव में तीन तालाब हैं, एक प्राइमरी पाठशाला स्कूल है और एक जूनियर हाईस्कूल है। गाँव मुरादाबाद में कृषि क्षेत्रफल लगभग 330 हेक्टेयर है जिस पर कृषि की जाती है। गाँव मुरादाबाद में जनगणना 2011 के अनुसार लगभग 2193 जनसंख्या है। जिसमें से स्त्री एवं पुरुषों की संख्या क्रमश: 1008 एवं 1185 है और 72% आबादी कृषि कार्य कर रही है।

**शोध समस्या**

कृषि उपज के लिए अनेक आगत साधन प्रयोग में लाये जाते है जिनके द्वारा कृषि उपज प्राप्त करना संभव होता है। कुछ मुख्य आगत इस प्रकार हैं जैसे- भूमि, कृषि यंत्र, सिचाई, श्रम, उर्वरक, बीज, जुताई, कीटनाशक दवाई एवं परिवहन आदि। जिन कृषकों के पास कृषि भूमि कम है या नहीं है तो किसान कृषि कार्य के लिए भूमि पट्टे (पेशगी) पर ले लेते हैं। पट्टे की कीमत वर्ष 2015-16 में 4000 रुपए प्रति बीघा थी जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर 7000 रुपए प्रति बीघा हो गयी है। कृषि कार्य करने वाले मजदूरों की मजदूरी वर्ष 2015-16 में 175 रुपए प्रतिदिन प्रति मजदूर थी जोकि वर्ष2020-21में 400 रुपए प्रतिदिन प्रति मजदूर हो गयी है। वर्ष 2015-16 में यूरिया 530 रुपए प्रति किवंटल था और N.P.K. और D.A.P. 1950 और 2400 रुपए प्रति किवंटल था और वर्ष 2020-21में यूरिया, N.P.K. और D.A.P. का मूल्य बढ़कर 600, 2400 और 2800 रुपए प्रति किवंटल हो गया है जोकि निरंतर बढ़ रहा है। जिसके प्रणाम स्वरूप कृषि लागत भी निरंतर बढ़ रही है और कृषकों के लाभ भी निरंतर कम होते जा रहे हैं। वहीं, कृषकों की उपज के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हो रही है। धान (1509) का मूल्य वर्ष 2015-16 में 1700 रुपए किवंटल था, गेहूं का मूल्य वर्ष 2015-16 में 1450 रुपए प्रति किवंटल था एवं गन्ने का मूल्य वर्ष 2015-16 में 300 प्रति किवंटल था और वर्ष 2020-21 में धान(1509), गेहूं एवं गन्ने का मूल्य बढ़कर क्रमश:1750, 1650 एवं 316 प्रति किवंटल हुआ है।

इसी तरह से परिवहन लागत में भी निरंतर वृद्धि हुई है। गाँव मुरादाबाद से सिकंदराबाद मंडी उपज ले जाने पर वर्ष 2015-16 में 15 रुपए प्रति किवंटल का किराया लगता था जोकि वर्ष 2020-21में बढ़कर 40 रुपए प्रति किवंटल हो गया है। जिससे कृषि लागत निरंतर बढ़ रही है और आय कम होती जा रही है और कृषकों का जीवन स्तर निम्न ही बना हुआ है।

**शोध के उद्देश्य**

कृषि कार्य में कृषकों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे- निरंतर बढ़ती कृषि लागत एवं उपज का मूल्य न बढ़ना आदि। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इस शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों पर कार्य करना निश्चित किया गया है-

1. कृषि में कृषकों की बढ़ती कृषि लागत और घटती कृषकों की आय का मूल्यांकन करना है।
2. कृषि में बढ़ती कृषि लागत के प्रभावों से घटता कृषि उत्पाद राजस्व की समस्या का मूल्यांकन करना है।
3. कृषकों के जीवन स्तर का अध्ययन करना है।

**शोध साहित्य अवलोकन**

मिश्र (2007) के अनुसार, कृषि उत्पादन कार्य अनेक साधनों के सहयोग एवं प्रयास से पूर्ण किया जाता है। जिसमें भूमि, पूँजी, श्रम, प्रबंध एवं साहस का कृषि उत्पादन प्रक्रिया में योगदान है। कृषि उत्पादन के क्षेत्र में ये सभी कारक समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। किसी भी कारक की कमी की अवस्था में कार्य करने के लिए उत्पादन के विभिन्न कारकों को अलग-अलग मात्राओं में किसान उपयोग करते हैं। उत्पादन के कारकों के अनुकूलतम संयोग से कार्य पर उत्पादन लागत में कमी आती है और उत्पादन अधिक प्राप्त होता है।

यादव, सिंह और शर्मा (2008) के अनुसार, कृषि आगतों का तात्पर्य उन साधनों से है, जो कृषि कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहयक होते हैं। वर्तमान समय में कृषि आगतों के प्रयोग से उत्पादन बढ़ रहा है क्योंकि पहले मशीनों का प्रयोग नहीं होता था। श्रम का ही अधिक प्रयोग होता था। अब गोबर की खाद के स्थान पर रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाने लगा है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अधिक प्रयोग करने से भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो गयी है।

भारत (2012) के अनुसार, स्थायी कृषि का राष्ट्रीय मिशन जलवायु परिवर्तन पर तैयार राष्ट्रीय कार्य योजना के अंतर्गत चलाया जाने वाला आठवाँ मिशन है। इसके तहत खादद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, जीवनयापन के अवसर उपलब्ध कराने और राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाने के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जो कम करने के उपाय और नीतियाँ तैयार करने के संबंध में स्थायी कृषि के मुद्दे पर विचार और मिशन को अनुसंधान और विकास अभियान्त्रिकी, उत्पाद और कार्य प्रणाली ढांचागत सुविधाएँ और क्षमता निर्माण के जरिये उपयुक्त उपाय और नीतियों को तैयार करने के साथ कार्यक्रम के क्रियान्वयन स्थायी कृषि प्रणाली को प्रोत्साहित करने के इस आयामों की पहचान की गयी। पारस्परिक तौर तरीकों और आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण को बनाए रखने वाली कृषि विरासत पर भी बल दिया है।

वर्मा (17.01.2015 अमर उजाला) के अनुसार, राज्य घरेलू उत्पाद में गिरावट दर्शा रहे हैकि प्रदेश कि आर्थिक सेहत ठीक नहीं है। प्रदेश सरकार को इसे खतरे की घंटी के रूप में लेना चाहिए। कृषि क्षेत्र में 65 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं बहुत सारे उधोगों में कच्चा माल कृषि क्षेत्र से आता है। कृषि उत्पादन व उत्पादकता प्रभावित होने का सीधा असर उधोगों पर पड़ेगा। आने वाले समय में विकास दर बेहतर हो इसके लिए सरकार को कृषि क्षेत्र पर ध्यान देना होगा क्योंकि अभी कृषकों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। खेतों और बाजारों के बीच की खाई बहुत बढ़ गयी है। जिसमें सुधार लेकर आना बहुत जरूरी है।

पुरी और मिश्र (2014) के अनुसार, जहाँ सिचाई की व्यवस्था है। वहाँ उर्वरकों के प्रयोग से उत्पादकता में भारी वृद्धि होती है। उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की नष्ट होने वाली उर्वराशक्ति को प्राप्त किया जा सकता है और उसका बढ़ना भी संभव हो सकता है एवं अच्छी किस्म का बीजों के प्रयोग पर भी बल दिया जाता है। सरकार योजना कल के शुरुआत से ही बीजों की क़िस्मों में सुधार के प्रयास कर रही है। मशीन का प्रयोग खेती के लिए लाभदायक है इसलिए सभी विकसित देशों में खेती की सभी क्रियाएँ मशीनों की सहायता से सम्पन्न की जाती हैं और अब भारत में भी भी मशीनों का प्रयोग बढ़ा है जिससे उत्पादन बढ़ा है।

गोदरा (2006) के अनुसार, धनात्मक आर्थिक उदारीकरण की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण रही है। कृषि राष्ट्रीय व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को मजबूत बनाती है। भारतीय किसानों को अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता स्तर को ध्यान में रखकर उपज उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

केशवप्रसाद 'सरस' (2021) के अनुसार, हमारे देश में कृषि आर्थिक जगत की आधारशिला है। बिना कृषि के जीवनयापन कठिन है। कृषि के द्वारा ही अन्य व्यवसायों को आश्रय एवं आलम्बन प्राप्त होता है। भारतवासियों के रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं फिर भी यह अत्यंत पिछड़ी है। इसका कारण यह है कि भारतीय कृषि पर प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है जिनसे प्रीति व्यक्ति उत्पादन प्रभावित होता है। भारतीय कृषक गरीबी एवं निर्धनता का जीवन व्यतीत करते हैं। भारतीय कृषि की मुख्य समस्या यह है कि भारत में कृषि क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद GDP का केवल 0.3 प्रीतिशत ही कृषि शोध पर व्यय किया जाता है जबकि अमेरिका में4 प्रतिशत व्यय किया जाता है। "राष्ट्रीय किसान आयोग" ने इन कृषि शोधों हेतु 5 प्रतिशत व्यय करने का सुझाव दिया है।

**शोध की विधि**

यह शोध पत्र प्राइमरी एवं सेकंडरी समंकों पर आधारित है। प्राइमरी समंकों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली तैयार करके किसानों से प्रश्न पूछकर प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण किया गया है। सेकंडरी डेटा का संकलन विकास भवन, कृषि भवन तथा तहसील में उपलब्ध कृषि संबंधी प्रतिवेदनों, विभिन्न कृषि संबंधी पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों एवं पुस्तकालयों में उपलब्ध साहित्य एवं जर्नल से किया गया है।

**शोध का महत्व**

शोध पत्र के द्वारा कृषकों से कृषकों की बढ़ती कृषि उपज लागत की स्थिति का पता लगाया गया है। इस शोध अध्ययन से कृषकों की बढ़ती कृषि लागत को कम करने के उपाय निकाले गये हैं। यह शोध पत्र सरकार की कृषि संबंधी नीति बनाने में भी सहायता कर सकता है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से कृषकों को कम लागत से अधिक उपज प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। यह शोध पत्र कृषकों की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालेगा और इसके माध्यम से सरकार को भी जानकारी होगी कि कृषकों की लागत कितनी आती है। सरकार भी कृषि लागत कम करने की दिशा में कार्य करने का प्रयास करेगी जिससे कृषकों की आय में वृद्धि होगी एवं कृषकों का आर्थिक जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

**आंकड़ों का विश्लेषण**

**साधन मूल्य**

जिला बुलंदशहर की तहसील सिकंदराबाद के गाँव मुरादाबाद के कृषकों से गत छः वर्षों के साधन मूल्य की जानकारी प्राप्त की गयी है। जिसे तालिका 01 में दर्शाया गया है।

**तालिका 01: गत छः वर्षों के साधन मूल्य में वृद्धितालिका 01: गत छः वर्षों के साधन मूल्य में वृद्धि**

| क्र.स. | मदें | 2015-16 | 2016-17 | 2017-18 | 2018-19 | 2019-20 | 2020-21 | औसत मूल्य | मूल्य में वृद्धि (%) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| A | उर्वरक मूल्य प्रति किवंटल | | | | | | | | |
| 1 | यूरिया | 530 | 535 | 500 | 570 | 600 | 600 | 556 | 13.21 |
| 2 | N.P.K. | 1950 | 2130 | 2250 | 2300 | 2400 | 2400 | 2238 | 23.08 |
| 3 | D.A.P. | 2400 | 2500 | 2600 | 2800 | 2800 | 2800 | 2650 | 16.67 |
| | औसत मूल्य | 1627 | 1722 | 1783 | 1890 | 1933 | 1933 | 1815 | 18.81 |
| B | दवाईयां प्रति किलोग्राम | | | | | | | | |
| 1 | सायपेमेर्थ्रिन | 250 | 374 | 374 | 420 | 550 | 600 | 428 | 140 |
| 2 | फिप्रोनिल | 51 | 51 | 62 | 80 | 80 | 96 | 70 | 88.23 |
| 3 | इमिडक्लोप्रड | 1172 | 1255 | 1315 | 1400 | 1500 | 1620 | 1377 | 38.23 |
| | औसत मूल्य | 491 | 560 | 583.67 | 633.33 | 710 | 772 | 625 | 57.23 |
| C | बीज का मूल्य प्रति किवंटल | | | | | | | | |
| 1 | धान (1509) | 5000 | 6000 | 7500 | 8500 | 9000 | 11500 | 7916 | 130 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | गेहूँ | 2000 | 2200 | 2350 | 2525 | 2700 | 3500 | 2546 | 75 |
| 3 | गन्ना | 270 | 270 | 300 | 300 | 350 | 400 | 315 | 48 |
| | औसत मूल्य | 2423 | 2823 | 3383 | 3775 | 4017 | 5133 | 3592 | 112 |
| **D** | **जुताई एवं सिचाई प्रति एकड़ मूल्य** | | | | | | | | |
| 1 | जुताई | 4000 | 4000 | 4500 | 5000 | 6000 | 6300 | 4967 | 58 |
| 2 | सिचाई | 2500 | 3500 | 3500 | 4500 | 6000 | 6500 | 4417 | 160 |
| | औसत मूल्य | 3250 | 3750 | 4000 | 4750 | 6000 | 6400 | 4692 | 97 |
| **E** | **मजदूरी प्रतिदिन** | | | | | | | | |
| | मजदूरी | 175 | 200 | 250 | 300 | 350 | 400 | 279 | 128 |
| **F** | **परिवहन किराया प्रति किवंटल** | | | | | | | | |
| 1 | धान | 15 | 20 | 20 | 25 | 30 | 40 | 25 | 167 |
| 2 | गेहूँ | 15 | 20 | 20 | 25 | 30 | 40 | 25 | 167 |
| 3 | गन्ना | 10 | 10 | 10 | 15 | 15 | 20 | 13.3 | 100 |
| | औसत किराया | 13.33 | 16.67 | 16.67 | 21.67 | 25 | 33.33 | 21.1 | 150 |

**स्त्रोतः** कृषि इकाई केंद्र, सिकंदराबाद एवं प्राइमरी सर्वेक्षण

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के बाद भी भारत के कृषक कृषि छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं क्योंकि कृषि साधनों की कीमत निरंतर बढ़ती जा रही है। वर्ष 2015-16 में यूरिया, N.P.K. और D.A.P. क्रमशः 530, 1950और 2400 रुपए प्रति किवंटल मिलता था जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर क्रमशः 600, 2400 और 2800 रुपए प्रति किवंटल हो गया है। इसी प्रकार वर्ष 2015-16 में सायपेमेर्थ्रिन, फिप्रोनिल और इमिडक्लोप्रिड की कीमत क्रमशः 250, 51 और 1172 रुपए प्रति किलोग्राम थी जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर क्रमशः 600, 96 और 1620 प्रति किलोग्राम हो गयी। वर्ष 2015-16 में धान, गेहूँ और गन्ने के बीज का मूल्य 5000, 2000 और 270 रुपए प्रति किवंटल था जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर क्रमशः 11500, 3500 और 400 रुपए प्रति किवंटल हो गया है जोकि सामान्य बीज हैं। कृषक यदि बीज किसी कम्पनी या किसी ब्रांड का ले तो बीज और भी महंगा मिलता है।
वर्ष 2015-16 में एक एकड़ में लगभग 4000 रुपए में जुताई होती थी जोकि वर्ष 2020-21 में लगभग 6300 रुपए प्रति एकड़ जुताई का खर्चा हो गया है। वर्ष 2015-16 में एक एकड़ फसल की सिचाई में लगभग 2500 रुपए का खर्चा आता था जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर लगभग 6500 रुपए खर्च आने लगा है। वर्ष 2015-16 में मजदूरी 175 रुपए प्रतिदिन थी जो वर्ष 2020-21 में बढ़कर 400 रुपए प्रतिदिन हो गयी है और वर्ष 2015-16 में परिवहन खर्च 15 रुपए प्रति किवंटल था जो 2020-21 में बढ़कर 40रुपए प्रति किवंतल हो गया है। कीमत के साथ साथ साधनों के प्रयोग की भी मात्रा निरंतर बढ़ रही है क्योंकि वर्ष 2020-21 में यूरिया और NPK का प्रयोग क्रमशः 2 किवंटल तथा 80 किलोग्राम प्रति एकड़ हो गया है। जिससे कृषि लागत निरंतर बढ़ रही है।

**उत्पाद मूल्य में वृद्धि**

गाँव मुरादाबाद के कृषकों से गत छः वर्षों के उत्पाद मूल्य की प्रति वर्ष के आंकड़े प्राप्त किए गए हैं। जिससे तालिका 02 में दर्शाया गया है।

**तालिका 02: गत छः वर्षों में उत्पाद मूल्य में वृद्धि**

| क्र.स. | मदें | 2015-16 | 2016-17 | 2017-18 | 2018-19 | 2019-20 | 2020-21 | औसत मूल्य | में वृद्धि(%) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | धान (1509) | 1700 | 1900 | 1800 | 2100 | 1700 | 1750 | 1825 | 2.94 |
| 2 | गेहूँ | 1450 | 1525 | 1625 | 1700 | 1675 | 1650 | 1604 | 13.79 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | गन्ना | 300 | 300 | 315 | 315 | 316 | 316 | 310 | 5.33 |

**स्त्रोत** प्राइमरी सर्वेक्षण

फसलों के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है। वर्ष 2015-16 में धान (1509) का मूल्य 1700 रुपए प्रति किवंटल था जोकि वर्ष 2020-21 में बढ़कर 1750 रुपए हो गया। इसी प्रकार से गेहूं और गन्ने का मूल्य वर्ष 2015-16 में क्रमश: 1450 और 300 रुपए प्रति किवंटल था जोकि वर्ष 2020-21 में क्रमश: 1650 और 316 रुपए प्रति किवंटल हो गया है। जिससे पता चलता है कि फसलों के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है। देखा जाए तो साधनों की कीमत बहुत तेजी से बढ़ रही है लेकिन फसलों के मूल्य में अपेक्षाकृत बहुत कम वृद्धि हो रही है। इसके साथ प्रति एकड़ उत्पादन तो बढ़ रहा है लेकिन प्रति एकड़ लागत अपेक्षाकृत बहुत अधिक आ रही है।

गाँव मुरादाबाद के कृषकों से उपज मूल्य की प्राप्ति कर गतछ: वर्षों में साधन के औसत मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि को निकाल गया है जिसे तालिका 03 में दर्शाया गया है।

**तालिका 03:** साधन औसत मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि

| क्र. स. | साधन | औसत मूल्य | औसत प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | उर्वरक | 1815 | 18.81 |
| 2 | बीज | 3592 | 112 |
| 3 | दवाई | 625 | 57.23 |
| 4 | तकनीकी श्रम | 4692 | 97 |
| 5 | मजदूरी | 279 | 128 |
| 6 | परिवहन | 21.1 | 150 |

गत छ: वर्षों के साधन मूल्य पर सर्वेक्षण में पाया गया कि उर्वरक का औसत मूल्य 1815 रुपए है एवं औसत वृद्धि 18.81% हुई है और बीज का औसत मूल्य 3592 रुपए है एवं औसत वृद्धि 112% हुई है। दवाई में औसत वृद्धि 625 रुपए एवं औसत वृद्धि 57.23% हुई है। तकनीकी श्रम का औसत मूल्य 4692 रुपए एवं औसत वृद्धि 97% हो गयी है और श्रम का मूल्य 279 रुपए एवं औसत वृद्धि 128% हो गयी है। इसी प्रकार से परिवहन का औसत मूल्य 21.1 रुपए है एवं औसत वृद्धि 150% हो गयी है। इससे हमे पता चलता है कि औसत मूल्य एवं औसत प्रतिशत में अधिक वृद्धि हो रही है। कृषक अपना सारा धन साधन प्राप्त करने में खर्च कर देता है जिसका फायदा उधोग एवं कम्पनियांउठा रही हैं और किसान को बहुत कम लाभ प्राप्त हो रहा है क्योंकि उपज का मूल्य बहुत कम बढ़ रहा है।

कृषकों से गत छ: वर्षों में उपज के मूल्य में हुई वृद्धि के आकड़े एकत्र कर छ: वर्षो के औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि निकली गयी है। जिसे तालिका 04 में दिखाया गया है।

**तालिका 04: औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि**

| क्र. स. | साधन | औसत मूल्य | औसत प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | धान (1509) | 1825 | 2.94 |
| 2 | गेहूँ | 1604 | 13.79 |
| 3 | गन्ना | 310 | 5.33 |

गत छ: वर्षों के औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि के लिए धान, गेहूं और गन्ने की फसल को लिया गया है। छ: वर्षों में धान, गेहूं एवं गन्ने का औसत मूल्य क्रमश: 1825, 1604 और 310 रुपए रहा है एवं औसत वृद्धि मात्र क्रमश: 2.94 ,13.79 और 5.33 प्रतिशत हो पायी है।

तालिका 01 के आधार पर 2020-21 में धान एवं गेहूँ की फसल में प्रति एकड़ लागत को तालिका 05 में दिखाया है।

**तालिका 05: धान एवं गेहूँ की फसल में प्रति एकड़ लागत 2020-21 में**

| क्र. स. | मदें | धान में लागत | गेहूँ में लागत |
|---|---|---|---|
| 1 | यूरिया | 1200.00 | 720.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2 | N.P.K. | 600.00 | 600.00 |
| 3 | बीज | 700.00 | 1050.00 |
| 4 | जुताई | 3500.00 | 2500.00 |
| 5 | सिचाई | 4000.00 | 2000.00 |
| 6 | श्रम एवं मजदूरी | 13000.00 | 8000.00 |
| 7 | परिवहन | 480.00 | 510.00 |
| 8 | दवाई | 3000.00 | 2000.00 |
| | **कुल लागत** | **26480.00** | **17380.00** |

वर्ष 2020-21 में एक एकड़ धान में लगभग 1200 रुपए की N.P.K., 600 रुपए का यूरिया एवं 700 का बीज प्रयोग हुआ है। एक एकड़ में लगभग 3000 रुपए की दवाई प्रयोग की गयी है। एक एकड़ में लगभग 3500 रुपए में जुताई एवं 4000 रुपए में सिचाई हुई है। धान में लगभग 6 बार पानी लगाया जाता है। कृषक द्वारा देखभाल के अतिरिक्त भी श्रम एवं मजदूरी पर भी 13000 रुपए खर्च हुए हैं। परिवहन में भी लगभग 480 रुपए खर्च हुआ हैं। इस प्रकार से एक एकड़ धान की फसल की उपज के लिए लगभग 26480 रुपए खर्चा हुआ है।वर्ष 2020-21 में एक एकड़ गेहूँ में लगभग 720 रुपए की, 600 रुपए का यूरिया एवं 1050 का बीजप्रयोग हुआ है। एक एकड़ में लगभग 2000 रुपए की दवाई प्रयोग की गयी है। एक एकड़ में लगभग 2000 रुपए में जुताई एवं 2500 रुपए में सिचाई हुई है। गेहूँ में लगभग 3 बार पानी लगाया जाता है। कृषक द्वारा देखभाल के अतिरिक्त भी श्रम एवं मजदूरी पर भी 8000 रुपए खर्च हुए हैं। परिवहन में भी लगभग 510 रुपए खर्च होते हैं। इस प्रकार से एक एकड़ गेहूँ की फसल की उपज के लिए लगभग 17380 रुपए खर्चा हुआ है।गाँव मुरादाबाद के कृषकों से एक एकड़ धान एवं गेहूँ की उपज एवं आय से संबन्धित आंकड़े प्राप्त किए गए हैं। जिसे तालिका 06 में दिखाया गया है।

**तालिका 06:** एक एकड़ में धान एवं गेहूँ की उपज का मूल्य(2020-21)

| **क्र. स.** | **मदें** | **उपज किवंटल में** | **मूल्य** |
|---|---|---|---|
| 1 | धान (1509) | 21 | 36750.00 |
| 2 | गेहूँ | 19 | 31350.00 |
| | **कुल उपज एवं मूल्य** | **40** | **68100.00** |

एक एकड़ कृषि क्षेत्र में धान लगभग 21 किवंटल होताहै और गेहूँ लगभग 19 किवंटल होता है। दोनों फसलों की कुल उपज का मूल्य लगभग 68100 रुपए हुआ है जिसमें से 43860 रुपए एक एकड़ कृषि लागत में चला गया। कृषक को 2020-21 में मात्र 24240 रुपए की बचत हुई है जोकि एक एकड़ कृषि क्षेत्र में प्राप्त हुई है। जिसमें कृषक द्वारा कृषि की देखभाल को छोड़ दिया गया है और पुआल एवं भूसा भी छोड़ा गया है क्योंकि कृषक के पास यदि एक भैंस भी है तो वह उसके खाने के लिए ही प्रयाप्त हो पाता है। इस प्रकार यदि, एक कृषक के परिवार में 6 सदस्य हैं और एक एकड़ भूमि है जिससे लगभग24240 रुपए वार्षिक ही प्राप्त होते हैं जिसमें से प्रत्येक सदस्य को लगभग 4040 रुपए प्राप्त होते हैं जो 336.67 रुपए प्रतिमाह पड़ता है। इस प्रकार, परिवार के एक व्यक्ति को प्रतिदिन 11.22 रुपए प्राप्त हो रहे हैं।

इसलिए कहा जा सकता है कि केवल कृषि से कृषक अपने परिवार का खर्चा भी नहीं चला सकता क्योंकि सरकार के अनुसार वर्ष 2020-21 में एक व्यक्ति 32 रुपए प्रतिदिन प्राप्त करता है तो वह गरीब नहीं है और इससे कम आय वाले गरीब की श्रेणी में आते हैं।

एक सीमान्त कृषक केवल कृषि से ही खर्चा नहीं चला सकता उसे परिवार के पालन-पोषण के लिए खाली समय में मजदूरी भी करनी पड़ती है। सरकार द्वारा योजना चलायी गयी है जैसे- मनरेगा, लेकिन इसका लाभ गाँव में किसी को भी प्राप्त नही हो पा रहा है। जब एक कृषक कृषि छोड़कर 9000 रुपए प्रतिमाह किसी प्राइवेट कम्पनी से कमा सकता है तो वह कृषि कार्य क्यों करेगा। इसलिए कृषक कृषि छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं और एक समय में कृषि केवल बड़े किसानों तक ही सीमित होकर रह जाएगी। गरीब, गरीब ही रह जाएगा।

**निरंतर बढ़ती कृषि उत्पादन लागत एवं कृषकों पर पड़ता प्रभाव**

जिला बुलंदशहर की तहसील सिकंदराबाद के गाँव मुरादाबाद के 100 कृषकों का सर्वेक्षण किया गया जिसमें गाँव मुरादाबाद के कृषकों से बढ़ती कृषि लागत एवं कृषकों की आय और जीवन स्तर की स्थिति से संबन्धित प्रश्न पूछे गये जिनका विवरण निम्न तालिका 07 में दर्शाया गया है।

**तालिका 07:** गाँव मुरादाबाद में बढ़ती कृषि लागत एवं कृषकोंकी आयऔर जीवन स्तर की स्थिति का विवरण

| क्र. स. | बढ़ती कृषि लागत एवं कृषकों की स्थिति का विवरण | सकारात्मक प्रभाव (%) में | नकारात्मक प्रभाव (%) में | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कृषिलागतें लगातार बढ़ने की स्थिति | 96 | 4 | 100 |
| 2 | कृषि से आपकी आय में वृद्धि की स्थिति | 9 | 91 | 100 |
| 3 | कृषि उपज के समर्थन मूल्य की स्थिति | 0 | 100 | 100 |
| 4 | समर्थन मूल्य पर उपज बिक्री की स्थिति | 2 | 98 | 100 |
| 5 | कृषि उपज बढ़ने की स्थिति | 8 | 92 | 100 |
| 6 | फसल ओलावृष्टि एवं सूखा आदि से प्रभावित होने कीस्थिति | 80 | 20 | 100 |
| 7 | किसान क्रेडिट कार्ड की स्थिति | 74 | 26 | 100 |
| 8 | फसल बीमा की स्थिति | 2 | 98 | 100 |
| 9 | कृषि कार्य हेतु ऋण लेने की स्थिति | बैंक88 | साहूकार 12 | 100 |
| 10 | कृषि कार्य करने वाले मजदूरों की मजदूरी बढ़ने की स्थिति | 100 | 00 | 100 |
| 11 | नवीन तकनीक अच्छी है या परंपरागत तकनीक अच्छी है। | नवीन 79 | परंपरागत 21 | 100 |
| 12 | सिचाई विभाग द्वारा सिचाई की स्थिति | 00 | 100 | 100 |
| 13 | कृषि करने से आपके जीवन स्तर में सुधार की स्थिति | 10 | 90 | 100 |
| 14 | ग्रामीण विकास की स्थिति अच्छी है। | 24 | 76 | 100 |

**स्त्रोत** प्राइमरी सर्वेक्षण

उपर्युक्त तालिका द्वारा गाँव मुरादाबाद के कृषकों की निरंतर बढ़ती लागत एवं उनके जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

गाँव मुरादाबाद के 100 किसानों पर सर्वे किया गया। सर्वे में कुछ प्रश्न पूछे गए जैसे- कृषि लागत बढ़ रही है या नहीं तो 96% किसानों ने माना की लागत बढ़ रही है और 4% किसानों ने माना की नहीं बढ़ रही है। इससे पता चलता है कि कृषि लागत बढ़ रही है जिससे कृषकों की स्थिति खराब हो रही है। कृषकों की आय संबंधी सर्वे में 9% कृषकों ने माना आय बढ़ रही है और 91% कृषकों ने माना नहीं बढ़ रही जिसके कारण कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है। कृषि उपज के समर्थन मूल्य के सर्वे में पाया गया 100% किसान समर्थन मूल्य से खुश नहीं है और उन्हें अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इसके साथ ही ये भी पता चला की मात्र 2% किसान ही समर्थन मूल्य प्राप्त कर पाते हैं जो क्रय केंद्र पर बेचते हैं। कृषि उपज बढ़नें की स्थिति में 8%किसानों ने माना उपज बढ़ रही है और 92% किसानों ने माना नहीं बढ़ रही जबकि लागत निरंतर बढ़ रही है।ओलावृष्टि, कीटनाशक प्रकोप एवं सूखा से संबंधी स्थिति में 80% कृषकों ने माना कि फसल प्रभावित होती है और 20% ने माना नहीं होती। किसान क्रेडिट कार्ड के विषय में पूछने पर पता चला कि 100 में से 74% कृषकों के पास किसान क्रेडिट कार्ड है और 26% का पास नहीं है क्योंकि कुछ कृषकों के पास बहुत कम भूमि है तो वह जोखिम में नहीं पड़ना चाहते। फसल बीमा 100 में से सिर्फ 2% ने कराया हुआ है और 98% कृषक फसल बीमा नहीं कराया हुआ है।

कृषि कार्य के लिए ऋण लेने के संबंध में पूछने पर पाया गया कि 88% कृषक बैंक से ऋण लेते हैं और 12% कृषक साहूकार से ऋण लेते हैं जिससे ज्ञात होता है कि कृषक ऋण के बोझ में दब रहे हैं जोकि किसानों की खराब स्थिति को दर्शाता है। मुजदूरी बढ़नें के विषय में 100% कृषकों ने माना कि मजदूरी निरंतर बढ़ रही है। तकनीकी के बारे में पाया गया कि 79% किसान नवीन तकनीकी को अच्छा मानते है और 21% किसान अच्छा नहीं मानते और नयी तकनीकों का प्रयोग नहीं करते जिससे अच्छी उपज भी प्राप्त नहीं होता। सिचाई के विषय पर बात करने से पता चला कि गाँव में सिचाई विभाग द्वारा कभी सिचाई नहीं कराई जा रही है जिसकी वजह से कृषि लागत में बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है।

कृषकों के जीवन स्तर में सुधार संबंधी जानकारी में पाया गया कि 10% कृषक मान रहे हैं कि जीवन स्तर में सुधार हो रहा है जबकि 90% कृषकों ने माना कि जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हो रहा है इससे पता चलता है कि कृषकों का जीवन स्तर बहुत खराब है। ग्रामीण विकास के संबंध में 24% लोगों ने माना ग्रामीण विकास सही हो पा रहा है जबकि 76% ने माना कि ग्रामीण विकास सही से नहीं हो पाएगा क्योंकि कृषि लागत अधिक और उपज मूल्य कम है और जब तक गाँव का किसान मजबूत नहीं होगा तो ग्रामीण विकास कैसे संभव हो सकता है। इससे ज्ञात होता है कि यदि सरकार ने समय रहते कृषि पर ध्यान नहीं दिया तो किसान कृषि छोड़ने के लिए मजबूर होते रहेंगे और कृषि करना बंद कर देंगे।

**सुझाव**

कृषि उत्पादन से संबन्धित कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।

1. कृषक कृषि लागत कम करने के लिए गोबर (जैविक) खाद का प्रयोग अधिक से अधिक करें और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम से कम करें।इससे उपज एवं उसकी गुणवत्ता में भी अधिक वृद्धि होगी और फसल में बीमारी भी कम लगेंगी।कृषकों को समय-समय प रखे तों कि मिट्टी कि जाँच कराते रहना चाहिए और जिस तत्व की कमी हो,उसी तत्वकाप्रयोगअधिककरें।
2. सरकार को सभी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करना चाहिए जिससे किसी भी उपज को कृषक कम से कम न्यूनतम समर्थन मूल्य पर बेच सके और लाभ प्राप्त कर सके।
3. सरकार को इस विषय पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है कि मंडी परिसर में भी उपज का समर्थन मूल्य प्राप्त हो।
4. सरकार को कृषि बाजार साधनों के मूल्य पर नियंत्रण रखना चाहिए ताकि किसानों के आय का बड़ा भाग साधन मूल्य स्फीति की भेंट चढ़ने से बचाया जा सके।
5. सरकार को भंडार गृहों के निर्माण पर भी ध्यान देना चाहिए जिससे किसानों को तुरन्त बेचना नहीं पड़े।
6. सरकार को सिचाई विभाग द्वारा सिचाई कराने पर अत्यन्त ध्यान देने की जरूरत है।
7. जिस प्रकार कम्पनी कृषि साधन मूल्य स्वयं निर्धारित करती है उसी प्रकार किसानों में भी कीमत स्वतंत्र क्षमता विकसित करनी चाहिए जिससे कि वो भी अपनी कृषि उपज मूल्य के निर्धारण में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें।
8. छोटी जोत वाले किसानों को मजदूरी का कार्य स्वयं ही करना चाहिए। जिससे मजदूरी का खर्चा कम होने से कृषि लागत भी कम होगी और कृषकों को लाभ भी अधिक प्राप्त होगा।
9. कृषकों को आय अधिक करने के लिए सहयोगी खेती एवं जैविक खेती करने पर ध्यान देना चाहिए। कृषि के अतिरिक्त जैसे- गाय-भैंस पालन, कुक्कड पालन, मतस्य पालन आदि को भी अपनी आय में वृद्धि हेतु अपनाना चाहिए।

**निष्कर्ष**

एक एकड़ धान एवं गेहूँ की उपज प्राप्त करने में लगभग43860 रुपए की लागत आती है और कुल मूल्य 68100 रुपए प्राप्त होते हैं। जिसमें 24240 रुपए बचत के रूप में प्राप्त होते हैं जो एक परिवार के लिए अत्यन्त कम हैं, जिसके परिणाम स्वरूप कृषक अपने परिवार का सही से पालन पोषण नहीं कर पाते।इसी कारण कृषक कृषि छोड़कर फैक्ट्री व अन्य क्रियाओं में काम करने चला जाता है क्योंकि वहाँ उनको खेती की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त हो जाती है,क्योंकि कृषि लागत बढ़ने से किसानों को बहुत कम लाभ मिल रहा है।अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कृषि उपज साधनों को प्रयोग करने में ही कृषक की सारी आमदनी खर्च हो जाती है। जिससे किसानों का उपज लाभ न के बराबर हो जाता है और गरीब, गरीब ही रह जाता है। कृषि की साख और कृषक के वजूद को बचाने के लिए सरकार को कृषि उपज साधनों के मूल्यों के संबंध में किसान हितों एवं उनके कल्याण का अवलोकन करते हुए एक व्यावहारिक एवं विवेकशील कृषि नीति निर्मित करनी होगी ताकि कृषि के प्रति कृषकों की स्करात्मक सोच को बढ़ावा दिया जा सके और उनकी संबृध्दशीलता में वृद्धि की जा सके।

**संधर्भ ग्रंथ सूची**

1. *मिश्र,जयप्रकाश. कृषिअर्थशास्त्र,साहित्य भवन पब्लिकेशन्स,आगरा, 2007, 134 ।*
2. *यादव, बी. एस; सिंह, ऋचा और शर्मा, नंदिनी., भारतीय अर्थव्यवस्था, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2008, 241,242 ।*
3. *भारत ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, 2012, 93 ।*
4. *वर्मा, वासुदेव. अमर उजाला, बरेली. 2015, 10 ।*
5. *पुरी, वी. के. और मिश्र, एस. के., भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई,2014 ।*
6. *Godara, R. (2006), Rural Job opportunities Agricultural Development, HRD Times, December, vol. 13 No. 12, 30-31.*
7. *Keshav Prasad 'saras', 2021, Agricultural Economics in Modern India, Kalyani Publishers, Daryaganj, New Delhi, 51.*
8. *District statistical abstract Bulandshahr.*